

Roll No.	:	
Unique Paper Code	:	121301101 / 101
Name of the Paper	:	वैदिक वाङ्मयः ऋक् संहिता एवं निरुक्त Vaidika Vanmanya : Rk.-Samhita & Nirukta
Name of the Course	:	M.A. (Sanskrit), CC
Scheme	:	LOCF/Old Course
Semester	:	I
Duration	:	3 Hours
Maximum Marks	:	70

टिप्पणी:

1. इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी प्रश्नों के उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।
2. इस प्रश्नपत्र में कुल 6 प्रश्न हैं। इनमें से किन्हीं 4 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सबके अङ्क समान हैं।
3. कुल चार प्रश्नों को किसी भी सादे पेपर पर 3 घण्टे में पूर्ण करना है। सभी प्रश्नों को पूरा करने के बाद स्कैन करके एकल पीडीएफ बनाकर प्रदत्त पोर्टल पर अपलोड करना है।

Note:

1. Answers should be written in **Sanskrit** or in **Hindi** or in **English** but the same medium should be used throughout the paper.
2. There are **total 6 questions** in this question paper. **Attempt any 4 questions**. Each question contains equal marks.
3. The **4 questions** to be completed in 3 hours on plain sheets. Then after sheets need to be scanned and make single pdf the uploaded on specific portal.

1. पाठ्यक्रम में निर्धारित ऋग्वैदिक सूक्त अग्नि तथा सोम का सारांश लिखिए।

Write the summary of Rig Vedic Sukta अग्नि and सोम prescribed in the syllabus.

2. ऋग्वैदिक दार्शनिक सूक्त वाक् अथवा भाववृत्तम् का विस्तृत वर्णन कीजिए।

Describe in detail the Rig Vedic philosopher Sukta वाक् or भाववृत्तम्

3. वैदिक तुमर्थक तथा त्वार्थक प्रत्ययों पर प्रकाश डालिए।

Highlight the Vedic Suppressive and Repetitive Suffixes.

4. निरुक्त में वर्णित यास्क द्वारा उपसर्गों के वाचकत्व एवं द्योतकत्व के सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

Describe the principle of signification and denotation of prefixes by Yaks mentioned in Nirukta.

5. निरुक्त के अनुसार अनादिष्टदैवत मन्त्र विषय पर यास्क का मत प्रस्तुत कीजिए।

According to Nirukta, submit the opinion of Yaks on the subject of Unscriptural chant

6. यास्कीय निर्वचन सिद्धान्तों को बताते हुए एक निबन्ध लिखिए।

Write an essay explaining the Yasak's interpreting principles.